|| श्री गणेशाय नमः ||

''माँ जीण शक्ति मंगल पाठ''

श्लोक

विघ्न हरण मंगलकरण, गौरी सुत गणराज ।
कण्ठ विराजो शारदा, आन बचाओ लाज ॥
मात पिता गुरूदेव के, धरूँ चरण में ध्यान ।
कुल देवी माँ जीण भवानी, लाखों लाख प्रणाम ।

: प्रथम अध्याय :

चौपाई

जीण जीण भज बारम्बारा, हर संकट का हो निस्तारा ।
नाम जपे माँ खुश हो जावे, संकट हर लेती है सारा ॥ १ ॥

आदि शक्ति माँ जीण भवानी, महिमा माँ की किसने जानी ।
मंगल पाठ करूँ मैं तेरा, करो कृपा माँ जीण भवानी ॥ २ ॥

साँझ सबेरे तुझे मनाऊँ, चरणों में मैं शीश नवाऊँ ।

तेरी दया से भंवरावाली, मैं अपना संसार चलाऊँ ॥ ३ ॥
हर्ष नाथ की बहना प्यारी, जीवण बाई नाम तुम्हारा ।
गोरयां गाँव से दक्षिण में है, सुन्दर प्यारा धाम तुम्हारा ॥ ४ ॥

पूरब मुख मंदिर है प्यारा, भँवरावाली मात तुम्हारा ।
तीन ओर से पर्वत माला, साँचा है दरबार तुम्हारा ॥ ५ ॥

अष्ट भुजायें मात तुम्हारी, मुखमण्डल पर तेज निराला ।
अखण्ड ज्योति बरसों से जलती, जीण भवानी हे प्रतिपाला ॥ ६ ॥

एक घृत और दो है तेल के, तीन दीप हर पल है जलते ।
मुगल काल के पहले से ही, ज्योति अखण्ड है तीनों जलते ॥ ७ ॥

अष्टम् सदी में मात तुम्हारे, मंदिर का निर्माण हुआ है ।
भगतों की श्रद्धा और निष्ठा, का जीवन्त प्रमाण हुआ है ॥ ८ ॥

देवालय की छतें दीवारें, कारीगरी का है इक दर्पण ।
तंत्र तपस्वी वाममार्गी, के चित्रों का अनूपम चित्रण ॥ ९ ॥

शीतल जल के अमृत से दो, कलकल करते झरने बहते ।

एक कुण्ड है इसी भूमि पर, जोगीताल जिसे सब कहते ।।१०।।
देश निकाला मिला जो उनको, पाण्डु पुत्र यहाँ पर आये ।
इसी धरा पर कुछ दिन रहकर, वो अपना बनवास बिताये ।।११।।
बड़े बड़े बलशाली भी माँ, आकर दर पे शीश झुकाये ।
गर्व करे जो तेरे आगे, पल भर में वो मुँह की खाये ।।१२।।
मुगलों ने जब करी चढ़ाई, लाखों लाखों भंवरे छोड़े ।
छिन्न विछिन्न किये सेना को, मुगलों के अभिमान को तोड़े ।।१३।।
नंगे पैरों तेरे दर पे, चल के औरंगजेब था आया ।
अखण्ड ज्योत की रीत चलाई, चरणों में माँ शीश नवाया ।।१४।।
सूर्य उपासक जगदेव जी, राज नलवलगढ़ में करते थे ।
भँवरावाली माँ की पूजा, रोज नियम से वो करते थे ।।१५।।
अपनी दोनो रानी के संग, देश निकाला मिला था उनको ।
पहुँच गये कन्नौज नगर में, जयचन्द ने वहाँ शरण दी उनको ।।१६।।
कुरुक्षेत्र के युद्ध के पहले, काली ने हुँकार भरी थी ।

भँवरावाली बन कंकाली, दान लेने को निकल पड़ी थी ।।१७।।
सारी प्रजा के हित की खातिर, जगदेव ने शीश दिया था ।
शीश उतार के कंकाली के, श्री चरणों में चढ़ा दिया था ।।१८।।
भँवरावाली की किरपा से, जीवन उसने सफल बनाया ।
माता के चरणों में विराजे, शीश का दानी वो कहलाया ।।१९।।
सुन्दर नगरी जीण तुम्हारी, सुन्दर तेरा भवन निराला ।
यहाँ बने विश्राम गृहों में, कुण्डी लगे, लगे ना ताला ।।२०।।
करुणामयी माँ जीण भवानी, जो भी तेरे धाम न आया ।
चाहे देखा हो जग सारा, जीवन उसने व्यर्थ गवाँया ।।२१।।
आदि काल से ही भक्तों ने, वैष्णों रूप में माँ को ध्याया ।
वैष्णों देवी जीण भवानी, की है सारे जग में माया ।।२२।।
दुर्गा रूप में देवी माँ ने, महिषासुर का वध किया था ।
काली रूप में सब देवो ने, जीण का फिर आह्वान किया था ।।२३।।
सभी देवताओं ने मिलकर, काली रूप में माँ को ध्याया ।

अपने हाथों से सुरगण ने, माँ को मदिरा पान कराया ।। २४ ।।
वर्तमान में वैष्णों रूप में, माँ को ध्याये ये जग सारा ।
जीण जीण भज बारम्बारा, हर संकट का हो निस्तारा ।। २५ ।।

दोहा

सिद्ध पीठ काजल शिखर, बना जीण का धाम ।
नित की परचा देत हैं, पूरण करती काम ।।

चौपाई

मंगल भवन अमंगल हारी, जीण नाम होता हितकारी ।
कौन सो संकट है जग माँही, जो मेरी मैया मेट न पाई ।।

: द्वितीय अध्याय :

माला बाबा अर्चन पूजा, मात जयन्ति की करते थे ।
पाराशर ब्राह्मण कुल-वंशी, देवी की सेवा करते थे ।।२६।।
माला बाबा के सेवाकाल में, वाममार्गी यहाँ पे आये ।

अखण्ड धूनी सिद्धपीठ के, निकट में ही चालू करवाये ।।२७।।
कई वर्षों तक वाममार्गी, जीण धाम में समय बिताये ।
पुरी सम्प्रदाय के महन्त जी, उन सबके सरदार कहाये ।।२८।।
जीण धाम से वाममार्गी, कालान्तर में कूच किये थे ।
जाते हुये माला बाबा को, अखण्ड धूनी सौंप गये थे ।। २९ ।।
कपिल मुनी भी उसी काल में, जीण धाम में आन पधारे ।
घोर तपस्या करी वहाँ पर, पर्वत से निकले जल धारे ।। ३० ।।
कपल धार की वह जलधारा, कुण्ड रूप में आज विराजे ।
उसी कुण्ड के जल से पुजारी, मैया को स्नान कराते ।। ३१ ।।
आदि काल की सच्ची घटना, भक्तों तुमको आज बताऊँ ।
जीवण बाई हर्ष नाथ के, जीवन का वृतान्त सुनाऊँ ।। ३२ ।।
राजस्थान के जिला चुरु में, घांघू नामक एक ग्राम था ।
चौहानों के ठाकुर राजा, गंगो सिंह का वहाँ राज था ।। ३३ ।।
माला पुजारी को दर्शन दे, मात जयन्ति इक दिन बोली ।

जीण रूप में मै प्रगटूँगी, उनसे सच्चा भेद ये खोली ।।३४।।
जीवण बाई नाम की कन्या, गंगो सिंह के घर जन्मेगी ।
मेरी शक्ति से कलयुग में, घर घर उसकी पूजा होगी ।।३५।।

इक दिन राजा गंगो सिंह जी, खेलन को शिकार गये थे ।
वहाँ लोहागर जी के पास में, परी से नैना चार हुये थे ।।३६।।

सुन्दरता से मंत्र मुग्ध हो, गंगो सिंह जी परी से बोले ।
शादी करना चाहूँ तुमसे, तू मेरी अर्धागिंनी होले ।।३७।।

परी ये बोली सुनो हे राजा, मुझसे मेरा भेद न लेना ।
अगर भेद की बात करोगे, फिर पीछे तुम मत पछताना ।।३८।।

शर्त ये मेरी ध्यान से सुन लो, जब भी मेरे कक्ष में आवो ।
अन्दर आने से पहले ही, शयन कक्ष को तुम खटकावो ।।३९।।

शर्त मान कर गंगो सिंह ने, परी के संग में ब्याह रचाया ।
प्रेम और विश्वास के बल पे, अपना जीवन रथ चलाया ।।४०।।

परी की कोख से जीवण बाई, हर्षनाथ दोनों थे जन्मे ।

बड़ा प्रेम आपस में रखते, भाई बहना अपने मन में ।।४१।।
मन की कोमल जीवण बाई, सच्ची सीधी भोली भाली ।
हर्षनाथ ने निज बहना की, कोई बात कभी ना टाली ।।४२।।

इक दिन राजा गंगो सिंह जी, परी से मिलने घर में आये ।
सीधे शयन कक्ष जा पहुँचे, बिना द्वार को ही खटकाये ।।४३।।

शयन कक्ष के अन्दर जाकर, देख नजारा वो चकराये ।
परी बनी थी वहाँ सिंहनी, गंगो सिंह मन में घबराये ।।४४।।

परी यूँ बोली सुनो हे राजन, भेद मेरा तुम जान गये हो ।
अब तुम मुझसे मिल ना सकोगे, वादा अपना भूल गये हो ।।४५।।

शर्त तोड़ कर तुमने राजन, वादे का अपमान किया है ।
इतना कहकर परी ने झटपट, इन्द्रलोक प्रस्थान किया है ।।४६।।

कुछ दिन उनके साथ में रहकर, गंगो सिंह परलोक सिधारे ।
बड़े हुए थे फिर वो दोनों, बनके इक दूजे के सहारे ।।४७।।

हर्षनाथ ने ब्याह रचाया, सुन्दर भावज घर में आई ।

प्यारी भाभी को पाकर वो, मन में फूली नहीं समाई ।।४८।।
भाई बहन का प्यार अनोखा, भाभी को बिल्कुल ना भाया ।
फूट डालने उनके मन में, भावज ने इक जाल बिछाया ।।४९।।
जीण भवानी के उदगम का, सच्चा हाल कहूँ मैं सारा ।
जीण जीण भज बारम्बारा, हर संकट का हो निस्तारा ।।५०।।

दोहा

सिद्ध पीठ काजल शिखर, बना जीण का धाम ।
नित की परचा देत हैं, पूरण करती काम ।।

चौपाई

मंगल भवन अमंगल हारी, जीण नाम होता हितकारी ।
कौन सो संकट है जग माँही, जो मेरी मैया मेट न पाई ।।

: तृतीय अध्याय :

रजपूतों में चुनड़ी का तब, ऐसा चलन हुआ था जारी ।
तीज त्योहारों के अवसर पर, चुनड़ी लाय उढ़ाये भाई ।।५१।।

हर्षनाथ की चुनड़ी देखकर, भावज बोली करके बहाना ।
जीवण को यह बड़ी पसन्द है, ये ही चुनड़ी मुझे उढ़ाना ।।५२।।
भोले भाले हर्षनाथ ने, पत्नि की बातों को माना ।
निज पत्नि की चालाकी से, भाई था बिल्कुल अन्जाना ।।५३।।
जीवण के संग अगले ही दिन, भाभी पानी भरने आई ।
बातों ही बातों में उसने, जीवण को यह बात बताई ।।५४।।
तुमसे ज्यादा तेरा भाई, मुझसे प्रेम करे है जीवण ।
जीवण को विश्वास ना आया, शर्त लगी दोनों में उस क्षण ।।५५।।
भाभी बोली अमुक चूनड़ी, गर वो मुझको आज उढ़ाये ।
तब तुम नणदल जान ही लेना, तुमसे ज्यादा मुझको चाहे ।।५६।।
होनी तो होकर रहती है, दोनो पानी भर कर लाई ।
घड़ा उतार के हर्षनाथ ने, पत्नि को चुनड़ी ओढ़ाई ।।५७।।
भारी ठेस लगी जीवण को, नैनों से बही अश्रु धारा ।
घड़ा फोड़ दौड़ी घाटी में, छूट गया पीछे जग सारा ।।५८।।

भाई पीछे दौड़ा आया, बहना को वो लाख मनाया ।
लेकिन उसने एक न मानी, होनी ने क्या जाल बिछाया ।। ५९ ।।

अब भैया मैं घर नहीं जाती, हर्षनाथ को वो बतलाती ।
मोहमाया सब छोड़ चुकी हूँ, तज दी घर और सखा संघाती ।। ६० ।।

पर्वत के ऊपर जीवण ने, जाकर इतना नीर बहाया ।
नैनों से जो काजल निकला, काजल शिखर वही कहलाया ।। ६१ ।।

शक्ति की फिर घोर तपस्या, जीवण बाई करने लागी ।
हर्षनाथ के मन में भक्तों, शंकर जी की भक्ति जागी ।। ६२ ।।

उलट दिशाओं में मुँह करके, घोर तपस्या दोनों ने की ।
आदिशक्ति माँ भंवरावाली, जीवण के सन्मुख आ प्रगटी ।। ६३ ।।

प्रगट होयकर मात जयन्ति, जीवण बाई से यूँ बोली ।
मेरी लौ तुझमें मिलने से, कहलाओगी जीण भवानी ।। ६४ ।।

घर-घर तेरी पूजा होगी, बोली माँ भँवरों की रानी ।
कलयुग में पूजी जाओगी, तुम भी बन भँवरों की रानी ।। ६५ ।।

द्वापर युग में नन्द के घर में, इक कन्या ने जन्म लिया था ।
वसुदेव ने उस कन्या को, कृष्ण के बदले बदल दिया था ।। ६६ ।।

कन्या रूप में मात जयन्ति, आठवीं बन सन्तान थी आई ।
कलयुग में माँ जीण भवानी, वही जयन्ति बन कर आई ।। ६७ ।।

हर्षनाथ ने शिव शंकर को, करके तपस्या खूब रिझाया ।
भोले जी की किरपा से फिर, भैरों रूप उन्हीं से पाया ।। ६८ ।।

शंकर जी का भवन निराला, हर्ष नाम के पर्वत ऊपर ।
भैरों हर्षनाथ का मन्दिर, बना हुआ है इस भूमि पर ।। ६९ ।।

सच्ची घटना मैं बतलाऊँ, सच्चा हाल सुनाऊँ सारा ।
जीण जीण भज बारम्बारा, हर संकट का हो निस्तारा ।। ७० ।।

दोहा

सिद्ध पीठ काजल शिखर, बना जीण का धाम ।
नित की परचा देत है, पूरण करती काम ।।

चौपाई

मंगल भवन अमंगल हारी, जीण नाम होता हितकारी ।
कौन सो संकट है जग माँही, जो मेरी मैया मेट ना पाई ।।

: चतुर्थ अध्याय :

वर्तमान में साक्षात् है, विद्यमान माँ आदि भवानी ।
शक्ति की किरपा से जीवण, कहलाई माँ जीण भवानी ।।७१।।

शिव पार्वती रूप तुम्हारा, दाहिनी ओर माँ लक्ष्मी साजे ।
बाँई तरफ में मात शारदा, वीणा वादिनी आप विराजे ।।७२।।

पाराशर के कुल वंशों को, माँ की पूजा का हक सारा ।
जीण भवानी की किरपा से, उन सबका चलता है गुजारा ।।७३।।

सारे जग में एक अकेली, तन्त्र वेद की मात भवानी ।
भगतों का कल्याण करे है, अलबेली भँवरों की रानी ।।७४।।

चमत्कार है देवी तेरा, नमस्कार है मेरा तुझको ।
दास जानकर अपना माता, चरणों में रख लेना मुझको ।। ७५ ।।

ऊपर काजल शिखर विराजे, नीचे भँवरा वाली साजे ।
बीच में मैया जीण भवानी, ड्योढी पे नोबत है बाजे ।। ७६ ।।

आठों पहर चौबीसों घंटे, खुला रहे ये माँ का द्वारा ।
नंगे पैरों दौड़ी आई, जिसने मन से नाम पुकारा ।। ७७ ।।

ऐसा है दरबार निराला, बिन बोले भगतों की सुनती ।
बिन माँगे माँ दे देती है, भक्तों के कष्टों को हरती ।। ७८ ।।

निर्धन दर पे दौलत पावे, लंगड़ा झटपट दौड़ा आवे ।
अन्धे को आँखें मिल जाती, बाँझन पल में बेटा पावे ।। ७९ ।।

दीन दयालु भँवरा वाली, भगतों की करती रखवाली ।
ये ही दुर्गा ये ही लक्ष्मी, ये ही काली खप्पर वाली ।। ८० ।।

जग में गूँजे नाम तिहारा, भगतों को लागे अति प्यारा ।
सबसे प्यारा तेरा द्वारा, वैभव इस दुनियाँ से न्यारा ।। ८१ ।।

मुखमण्डल की आभा भारी, अरज करे लाखों नर नारी ।
भक्तों का कल्याण करे माँ, नित की परचा देवे भारी ।। ८२ ।।

मनसे जो भी नाम पुकारे, कट जाती है विपदा सारी ।
भक्तों के दुखड़े हर लेती, विघ्न हरण माँ मंगलकारी ।।८३ ।।

सवामणी का भोग लगे है, सेवक जन गुणगान करे है ।
शरणागत् की लाज रखे माँ, भगतों का उद्धार करे है ।।८४ ।।

खीर चूरमा और नारियल, हलवा पूड़ी भोग है प्यारा ।
जीण जीण भज बारम्बारा, हर संकट का हो निस्तारा ।।८५ ।।

दोहा

सिद्ध पीठ काजल शिखर, बना जीण का धाम ।
नित की परचा देत है, पूरण करती काम ।।

चौपाई

मंगल भवन अमंगल हारी, जीण नाम होता हितकारी ।
कौन सो संकट है जग माँही, जो मेरी मैया मेट ना पाई ।।

: पंचम अध्याय :

पाराशर सारे मिल करके, चैत के नवरातों के आगे ।
जीण भवानी का न्योता ले, हर्षनाथ के पास में जाते ।।८६ ।।

दाल चूरमा बाटी की वो, सवामणी जाकर करवाते ।
न्योता देकर हर्षनाथ को, सारे मिलकर रात जगाते ।।८७ ।।

नवरातों में जीण धाम में, भारी भीड़ लगेगी भैरों ।
आकर उसको आप सम्भालो, न्योता तुम माँ का स्वीकारो ।।८८ ।।

आश्विन चैत के नौरातों में, लगता माँ का मेला भारी ।
दर्शन माँ का करने आते, देश दिशावर से नर नारी ।।८९ ।।

गठ्जोड़े से जात लगाये, बच्चों का मुण्डन करवाये ।
तरह तरह की मनोकामना, चौखट पे पूरी हो जाये ।।९० ।।

नंगे पैरों चल कर आते, मन्दिर पे निशान चढ़ाते ।
भंवरा वाली जीण भवानी, मैया की वो किरपा पाते ।।९१ ।।

जै जैकार लगाते सारे, बच्चे बूढ़े नर और नारी ।
माता का गुणगान करे है, मिल कर के सब बारी बारी ।।९२ ।।

हरियाणा के नारनोल से, बत्तिसी का संघ है आता ।
षष्ठी शुक्ला चैत में भक्तों, लिये मशाल हाथ में आता ।।९३ ।।

बारह बजे अर्धरात्री में, इक्कीस सेवक चलकर आते ।
नंगी तलवारों को थामे, सीधे माँ के मण्ड में जाते ।।९४।।

तीन पुजारी मण्ड में उस पल, माँ की सेवा में है रहते ।
धोक लगा चरणों में सारे, जाकर अपना शीश झुकाते ।।९५।।

मण्ड के पीछे पुजारी मिलके, उनको बाना देकर आये ।
हारी बीमारी में वो बाना, पीछे उनकी लाज बचाये ।।९६।।

महासप्तमी के दिन सेवक, माता की फिर रात जगाते ।
मीठे मीठे भाव भक्ति के, भजनों की बरसात कराते ।।९७।।

महा-अष्टमी के दिन सारे, चरणों में जा धोक लगाते ।
माता का वो कर भण्डारा, खीर चूरमा भोग लगाते ।।९८।।

कलकत्ता से नवरातों में, कई समिति दर पर जाती ।
गौर्‌याँ मोड़ से पैदल चल कर, माता का निशान चढ़ाती ।।९९।।

विप्रजनों और कन्याओं के, सारे मिलकर चरण धुलायें ।
बड़े प्रेम और श्रद्धा से फिर, उन सबको वो भोज कराये ।।१००।।

टोले के टोले दर आते, मीठे मीठे भजन सुनाते ।
जय माँ जीण के जयकारों से, धरती अम्बर है गुँजाते ।।१०१।।

कहते हैं माँ नवरातों में, सबकी इच्छा पूरण करती ।
दरपे आये हर सेवक की, जीण भवानी झोली भरती ।।१०२।।

खोल खजाना माल लुटाती, भक्तों के भण्डार है भरती ।
सेवक इतना पाते उनकी, झोली भी छोटी पड़ जाती ।।१०३।।

अपने भगतों की रखवाली, करती है माँ भँवरावाली ।
दुष्टों को ये मार भगाये, भक्तों का हित करने वाली ।।१०४।।

माँ का नाम बड़ा ही प्यारा, दुखड़ों से मिलता छुटकारा ।
जीण जीण भज बारम्बारा, हर संकट का हो निस्तारा ।।१०५।।

दोहा

सिद्ध पीठ काजल शिखर, बना जीण का धाम ।
नित की परचा देत है, पूरण करती काम ।।

चौपाई

मंगल भवन अमंगल हारी, जीण नाम होता हितकारी ।
कौन सो संकट है जग माँही, जो मेरी मैया मेट ना पाई ।।

: षष्ठम् अध्याय :

सर्वसुहागण तुझे मनाती, हाथों से माँ तुझे सजाती ।
लाल चूनड़ी चूड़ा मेहन्दी, रोली मोली भेंट चढ़ाती ।। १०६ ।।

लाल फूल के गजरे सोहे, सोणा सा सिणगार भवानी ।
साँची है सकलाई तेरी, साँचा है दरबार भवानी ।। १०७ ।।

जीण जीण जो नाम पुकारे, उसको तू संकट से उबारे ।
हृदय बीच बसाकर देखो, हो जायेगें वारे न्यारे ।। १०८ ।।

सवा मण्ड में मात विराजे, सिर सोने का छत्तर साजे ।
लाल ध्वजा तेरे मण्ड पे फहरे, सात कलश तेरे शिखर पे साजे ।। १०९ ।।

कानों में तेरे कुण्डल साजे, शीश बोरला सजे सुहाना ।
हाथों में त्रिशूल भवानी, गल मोतियन का हार सुहाना ।। ११० ।।

हाथों मेहन्दी रची सुरंगी, माँ का मुखड़ा दम दम दमके ।
लाल चुनरिया चमचम चमके, नथली में माँ हीरा चमके ।। १११ ।।

सिन्दूरी माँ तिलक लगा है, छप्पन भोग का थाल सजा है ।
महक रहा दरबार तुम्हारा, इत्तर का अंबार लगा है ।। ११२ ।।

सिंहासन पर आप विराजो, सेवक चँवर ढुलाये माता ।
देख देख श्रृंगार तुम्हारा, सेवक लेत बलायें माता ।। ११३ ।।

लाल जवा की माला सोहे, हीरा पन्ना दम-दम दमके ।
हार बासीको गले में सोहे, माथे पे तेरे बिन्दिया चमके ।। ११४ ।।

ढोल नगाड़े दर पे बाजे, भक्तों की माँ भीड़ बड़ी है ।
दोनों हाथ पसारे मैया, दुनिया तेरे द्वार खड़ी है ।। ११५ ।।

मुखड़े पे है तेज निराला, सिंह पीठ पर आप विराजे ।
नैनों से तेरे ममता बरसे, दर्शन से माँ संकट भाजे ।। ११६ ।।

अद्भुत है सिणगार भवानी, प्यारा सा है निखार भवानी ।
पल भर भी आँखे ना हटती, सेवक रहे निहार भवानी ।। ११७ ।।

सज के मैया यूँ बैठी है, मानो जैसे कोई शक्ति ।
भक्त करें अरदास आपसे, दे दो माँ हम सबको भक्ति ।। ११८ ।।

तेरी ममता हम बच्चों को, यूँ ही हरदम मिलती जाये ।
जनम जनम तक जीण भवानी, तेरी किरपा हम सब पाँये ।। ११९ ।।

सुन्दर ये श्रृंगार तुम्हारा, हम सबको लगता मां प्यारा ।
जीण-जीण भज बारम्बारा, हर संकट का हो निस्तारा ।। १२० ।।

दोहा

सिद्ध पीठ काजल शिखर, बना जीण का धाम ।
नित की परचा देत है, पूरण करती काम ।।

चौपाई

मंगल भवन अमंगल हारी, जीण नाम होता हितकारी ।
कौन सो संकट है जग माँही, जो मेरी मैया मेट ना पाई ।।

: सप्तम अध्याय :

पूजन थाल सजा कर माता, आज आरती तेरी ऊतारुँ ।

द्वार खड़ा माँ तेरा बालक, सोणी मूरत तेरी निहारुँ ।। १२१ ।।
मैया तुमको तिलक लगाकर, हाथों में चूड़ा पहनाऊँ ।
लाल सुरंगी मेहन्दी तेरे, हाथों में माँ आज रचाऊँ ।। १२२ ।।

जवा कुसुम के फूलों से मां, प्यारा सा इक हार बनाऊँ ।
लाल चुनरिया तारों वाली, माता तुझको आज उढ़ाऊँ ।। १२३ ।।

भाव भरी ये लाल चुनरिया, अम्बर से सजकर है आई ।
सूरज चाँद सितारों की माँ, किरणें इसमें आन समाई ।। १२४ ।।

ब्रह्मा जी ने बड़े चाव से, बुनकर के इक पोत बनाया ।
विष्णु जी ने बड़े प्रेम से, निज हाथों से इसे सजाया ।। १२५ ।।

श्री गणेश को लिये साथ में, भोले पार्वती भी आये ।
आज जरा इसे मान से ओढ़ो, इन्द्र देव गण सभी मनाये ।। १२६ ।।

लम्पी लूमा लगी सुरंगी, भाव भरी ये चूनड़ ओढ़ो ।
मुझको अपना जान भवानी, माँ बेटे का रिश्ता जोड़ो ।। १२७ ।।

इन्द्र धनुष के सात रंगों से, रंगी चुनरिया लाये माता ।

बड़े प्रेम से सारे सेवक, तुझको आज उढ़ाये माता ।।१२८ ।।
सबका तूने मान बढ़ाया, मुझको ना बिसराना माता ।
शरण तुम्हारी आन पड़ा हूँ, यूँ ही ना ठुकराना माता ।।१२९ ।।
तेरी किरपा जिस पर होवे, चमके है किस्मत का तारा ।
जब जब तेरा नाम पुकारा, तूने आकर दिया सहारा ।।१३० ।।
ममता की माँ शीतल छाया, आज मुझे भी दे देना तुम ।
चरणों में दे मुझे ठिकाना, शरण तुम्हारी ले लेना तुम ।।१३१ ।।
खाली झोली लेकर माता, द्वार तुम्हारे बेटा आया ।
पलक झपकते भर जायेगी, जान गया मैं तेरी माया ।।१३२ ।।
भाव भरे ना भक्ति आई, मेरे पापी मन के अन्दर ।
दया करो बन जाये इसमें, तेरा प्यारा सा इक मन्दिर ।।१३३ ।।
पुण्य आत्माओं के घर में, रहती हो तुम सदा भवानी ।
तेरी कृपा से ही जग सारा, रहता है खुशहाल भवानी ।।१३४ ।।
मंगल करणी हे दुःख हरणी, हम को है आधार तुम्हारा ।

जीण जीण भज बारम्बारा, हर संकट का हो निस्तारा ।।१३५ ।।

दोहा

सिद्ध पीठ काजल शिखर, बना जीण का धाम ।
नित की परचा देत है, पूरण करती काम ।।

चौपाई

मंगल भवन अमंगल हारी, जीण नाम होता हितकारी ।
कौन सो संकट है जग माँही, जो मेरी मैया मेट ना पाई ।।

: अष्टम् अध्याय :

नमो नमो हे जीण भवानी, नमो नमो हे अम्बे रानी ।
तीनों लोकों में ना दूजा, मैया तेरा कोई सानी ।।१३६ ।।
मन मोहक है रूप तुम्हारा, साँचा है माँ नाम तुम्हारा ।
जीण धाम की हे महारानी, सिद्ध पीठ है धाम तुम्हारा ।।१३७ ।।
अन्नपूर्णा अन्न की दाता, धन वैभव की लक्ष्मी माता ।
ज्ञान बुद्धि का रूप शारदे, चण्डी रूप में दुर्गा माता ।।१३८ ।।

हिंगलाज में आप भवानी, महिमा तेरी किसने जानी ।
सिंह सवारी करती माता, तुमसा दूजा कोई ना दानी ।। १३९ ।।

नमन है तुमको माँ ब्रह्मणी, नमन है तुमको हे रुद्राणी ।
शत् शत् नमन हमारा तुमको, नमन है तुमको जग कल्याणी ।। १४० ।।

सुख सम्पति की तुम हो दाता, नमस्कार हे भाग्य विधाता ।
बल बुद्धि विद्या की देवी, मातृ रूप में तुझे मनाता ।। १४१ ।।

कृपा करो हे मात भवानी, खोल मेरी तकदीर का ताला ।
शरणागत् को तूने माता, सारी विपदाओं से टाला ।। १४२ ।।

ऐसा दो वरदान भवानी, जनम जनम मैं तुझको पाऊँ ।
जब तक साँस चले ये मेरी, मैया तेरी महिमा गाऊँ ।। १४३ ।।

जग की माया मुझे सताये, रह रह करके मुझे डराये ।
तेरा ध्यान धरूँ जब माता, आकर ये बाधा पहुँचाये ।। १४४ ।।

मुझको माँ दुखड़ों ने घेरा, तुम बिन कौन यहाँ पर मेरा ।
तुम ही आकर राह दिखाओ, छाया है घनघोर अन्धेरा ।। १४५ ।।

मैया मैया आज पुकारूँ, सुनले करुण पुकार भवानी ।
आजा मुझको गले लगाले, थोड़ा सा दे प्यार भवानी ।। १४६ ।।

माना बिल्कुल नालायक हूँ, फिर भी मैं हूँ लाल तुम्हारा ।
बिन तेरे अब कौन सुने माँ, आजा सुनले हाल हमारा ।। १४७ ।।

सेवा पूजा कुछ ना जाने, छोटा सा ये दास भवानी ।
भूल चूक की माफी देना, तुमसे है अरदास भवानी ।। १४८ ।।

धन दौलत ना पास में मेरे, दो आँसू मैं भेट में लाया ।
मन मन्दिर में मूरत तेरी, आज बसा कर दौड़ा आया ।। १४९ ।।

चरणों में बस बैठा रहूँ मैं, मन में मेरे आस यही है ।
निर्मोही दुनियाँ की मुझको, अब कुछ भी परवाह नहीं है ।। १५० ।।

अपनों ने ही मुझे सताया, गैरों ने माँ खूब रुलाया ।
आखिर थक कर जीण भवानी, शरण तिहारी लेने आया ।। १५१ ।।

पाप की गठरी सिर पर लादे, भटक रहा हूँ जग जंगल में ।
जूझ रहा पतवार लिये माँ, मोह माया के इस दंगल में ।। १५२ ।।

जितने तारे नील गगन में, चाहे उतने शत्रु होवे ।
तेरी दया हो जिस पर माता, उसका बाल ना बाँका होवे ।।१५३ ।।

बावन भैरों चौंसठ योगिनी, आगे भैरु नृत्य करत है ।
ब्रह्मा विष्णु शिव शंकर माँ, हर पल तेरा ध्यान धरत है ।।१५४ ।।

तूही काली, तू जगदम्बा, ये सृष्टी है खेल तुम्हारा ।
जीण जीण भज बारम्बारा, हर संकट का हो निस्तारा ।।१५५ ।।

दोहा

सिद्ध पीठ काजल शिखर, बना जीण का धाम ।
नित की परचा देत है, पूरण करती काम ।।

चौपाई

मंगल भवन अमंगल हारी, जीण नाम होता हितकारी ।
कौन सो संकट है जग माँही, जो मेरी मैया मेट ना पाई ।।

: नवम् अध्याय :

कुल की देवी जीण भवानी, मन इच्छा मां पूरी करना ।
दास खड़ा अरदास गुजारे, मान हमारा तुम रख लेना ।।१५६ ।।

ऊँचे आसन आप विराजो, गंगा जल से चरण धुलाऊँ ।
रुखा सूखा पास जो मेरे, भोग लगा कर भोग मैं पाऊँ ।।१५७ ।।

धन दौलत ना पास में मेरे, श्रद्धा चाहे जितनी लेना ।
मन में मेरे भाव भरे हैं, आकर माता तुम पढ़ लेना ।।१५८ ।।

डूब न जाये नैया मेरी, आकर तुम पतवार सम्भालो ।
बीच भंवर में नाव हमारी, आकर के माँ इसे निकालो ।।१५९ ।।

माना मैया मैं पापी हूँ, फिर भी मेरी विनती सुनना ।
भूल चूक जो होवे मुझसे, उसकी लाज सदा तुम रखना ।।१६० ।।

अपनी शरण में लेना मैया, मुझको ना बिसराना मैया ।
तेरे बिना हे जीण भवानी, नहीं ठिकाना दूजा मैया ।।१६१ ।।

जय माँ जीण जय माँ जीण जय माँ जीण जय माँ जीण जय माँ जीण जय माँ जीण जय माँ जीण जय माँ जीण

आदि-शक्ति हे जीण भवानी, सारा जग माँ तुझको ध्याये ।
शिव शंकर भी आदि-देव की, तुझसे ही माँ पद्वी पाये ।। १६२ ।।

ब्रह्मा वेद पढ़े तेरे द्वारे, शिव शंकर तेरा ध्यान धरे है ।
इन्द्र कृष्ण तेरी करे आरती, चँवर कुबेर ढुलाय रहे है ।। १६३ ।।

तुम ही हो सर्वस्व हे जननी, सारी दुनियाँ तेरी माया ।
चारों धाम तेरे चरणों में, तुझमें है ब्रह्माण्ड समाया ।। १६४ ।।

माना मैं नालायाक हूँ माँ, त्याग ना देना मुझको माता ।
पूत कपूत तो हो सकता है, माता हुई ना कभी कुमाता ।। १६५ ।।

तेरे जैसी मैया पाकर, बालक तेरी शरण में आया ।
आँचल में माँ आज छिपाले, सारी दौलत आज मैं पाया ।। १६६ ।।

जिस घर में हो कृपा तुम्हारी, उस घर कोई कमी ना आवे ।
युगों युगों तक जीण भवानी, वो प्राणी जग से तर जावे ।। १६७ ।।

जीण नाम का जाप करुँ तो, जीवन मैं ''मधुपाक'' बनाऊँ ।
ऐसा दो वरदान भवानी, हर-पल तेरा ही गुण गाऊँ ।। १६८ ।।

जय माँ जीण जय माँ जीण जय माँ जीण जय माँ जीण 37 जय माँ जीण जय माँ जीण जय माँ जीण जय माँ जीण

जय माँ जीण जय माँ जीण जय माँ जीण जय माँ जीण जय माँ जीण जय माँ जीण जय माँ जीण जय माँ जीण

सुदी अष्टमी-नवमी को माँ, जो कोई लेता ज्योत तुम्हारी ।
प्रगट होय कर मात भवानी, मन इच्छा फल तू दे जाती ।। १६९ ।।

रोज नियम से पाठ करे जो, उसका पल में कष्ट टलेगा ।
ग्यारह पाठ करे जो कोई, मन-इच्छा फल उसे मिलेगा ।। १७० ।।

यह शत पाठ करे जो प्राणी, भव सागर से तर जायेगा ।
जीण भवानी महर करेगी, दामन उसका भर जायेगा ।। १७१ ।।

स्नान ध्यान कर धूप दीप धर, जो ये मंगल पाठ करेगा ।
'हर्ष' कहे माँ तेरी दया से, उस नर का भण्डार भरेगा ।। १७२ ।।

दुःख दारिद्र पास नहीं आते, शक्ति पाठ जहाँ हो तेरा ।
जिस घर में माँ आप विराजो, करती लक्ष्मी वहाँ बसेरा ।। १७३ ।।

कलम विराजी मात शारदा, मन बुद्धि को चिन्तन दीन्हा ।
मंगल पाठ भवानी तेरे, 'हर्ष' भगत ने पूरा कीन्हा ।। १७४ ।।

मंगल पाठ करे जो कोई, निश्चय हो जावे भव पारा ।
जीण जीण भज बारम्बारा, हर संकट का हो निस्तारा ।। १७५ ।।

जय माँ जीण जय माँ जीण जय माँ जीण जय माँ जीण 38 जय माँ जीण जय माँ जीण जय माँ जीण जय माँ जीण

दोहा

सिद्ध पीठ काजल शिखर, बना जीण का धाम ।
नित की परचा देत है, पूरण करती काम ।।

चौपाई

मंगल भवन अमंगल हारी, जीण नाम होता हितकारी ।
कौन सो संकट है जग माँही, जो मेरी मैया मेट ना पाई ।।

दोहा

मैया जीण की ज्योत ले, करेगा जो ये पाठ
भँवरा वाली की किरपा से, सदा रहेगें ठाठ

।। इति श्री ।।